2022

वार्षिक रिपोर्ट

educate girls

संस्था की विभिन्न गतिविधियां

कैंप विद्या (समुदाय-आधारित सीखने की पहल)	हमारे कार्यक्रम वाले भौगोलिक इलाकों में बंद स्कूलों की समस्या से निपटने के लिए एजुकेट गर्ल्स संस्था बदलते समय के साथ कदमताल मिलाने के लिए समुदाय आधारित शिक्षण (CBL) की पहल करती है, जो कैंप विद्या के नाम से जाना जाता है।
डोर टू डोर सर्वे	एजुकेट गर्ल्स संस्था जिस भी नए भौगोलिक इलाके में जाती है, वहां घर-घर जाकर सर्वे करती है। इस सर्वे में संस्था के स्टाफ और टीम बालिका हर घर जाकर अनामांकित बालिकाओं की पहचान करते हैं।
डोर-टू-डोर संपर्क	महामारी के कारण बड़े पैमाने पर सभाएं प्रतिबंधित हैं। ऐसे में बच्चों के माता-पिता को टीम बालिका घर-घर जाकर जागरूक कर रहे हैं।
ग्राम शिक्षा सभा या मोहल्ला बैठक (GSS/MM)	ग्राम शिक्षा सभा और मोहल्ला बैठक बालिका शिक्षा के महत्व के बारे में समुदाय को संवेदनशील बनाने और गांव के नेताओं, बड़ों, स्कूल प्रशासन, संस्था के कर्मचारियों और टीम बालिका के बीच जिम्मेदारी बांटने में मदद के लिए आयोजित की जाती हैं।
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV)	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय सरकार द्वारा संचालित कक्षा 6-8 में पढ़ने वाली लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय हैं।
जीवन कौशल	एजुकेट गर्ल्स संस्था किशोरी बालिकाओं को जीवन कौशल जैसे- समस्या समाधान, निर्णय लेने, उनके आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देने के लिए पारस्पारिक कौशल, लोगों के सामने बोलने, और संचार कौशल का प्रशिक्षण देती है।
शिक्षा से वंचित बच्चे (OOSC)	एक बच्चा या बच्ची यदि कभी स्कूल नहीं गया हो या नामांकन के बाद भी वह बिना पूर्व सूचना के 45 दिन या उससे अधिक समय के लिए अनुपस्थित रहा या रही हो तो उस बच्चे को शिक्षा से वंचित माना जाएगा।
उपयोगी शिक्षण पाठ्यक्रम	ज्ञान का पिटारा का मतलब होता है 'ज्ञान का भंडार', जो सूक्ष्म योग्यता आधारित उपयोगी शिक्षण पाठ्क्रम है, जिसे एजुकेट गर्ल्स संस्था ने सोल आर्क (एक प्रमुख शिक्षाशास्त्र विशेषज्ञ) की साझेदारी से डिजाइन किया है। इसके पाठ्यक्रम को कक्षा 3 से 5 में पढ़ रहे बच्चों (लड़का और लड़की) के अंग्रेजी, हिंदी और गणित के सीखने के स्तर में सुधार के लिए बनाया गया है।

स्कूल प्रबंधन समिति (SMC)	एक 15 सदस्यीय समिति है, जिसमें बच्चों के माता-पिता, शिक्षक, गांव के बड़े और स्कूल का एक छात्र/छात्रा शामिल होते हैं।
स्कूल सुधार योजना (SIP)	स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए एस.एम.सी द्वारा तैयार की गई योजना है, जिसमें प्रमुख सुविधाएं जैसे बिजली, पेयजल, छत, बाउंड्रीवॉल, बालिकाओं के लिए अलग शौचालय, आदि शामिल हैं। इन योजनाओं को तैयार करने में एजुकेट गर्ल्स के क्षेत्र समन्वयक और टीम बालिका एस.एम.सी. की सहायता करते हैं।
टीम बालिका	टीम बालिका एजुकेट गर्ल्स से जुड़े गांव आधारित अवैतनिक सामुदायिक स्वयंसेवक हैं। वे बालिका शिक्षा और लिंग समानता के चैंपियन हैं, जो एजुकेट गर्ल्स संस्था के कार्यकर्ताओं की स्कूलों और गांव स्तर पर सभी कार्यक्रम गतिविधियों को लागू करने में मदद करते हैं। वर्तमान में एजुकेट गर्ल्स से 18,000 से अधिक टीम बालिकाएं जुड़ी हैं।

Aa

कॉन्टेंट

1. हमारे बारे में	07
2. संस्थापिका की ओर से	08
3. बोर्ड के सदस्य	10
4. खबरों में	11
5. हमारे मील के पत्थर	12
6. बंदी से वापसी तक का सफर	15
कोविड-19 का निरंतर प्रभाव	
7. एजुकेट गर्ल्स की भागीदारी	21
सबसे जरूरतमंद लोगों तक पहुंचना	
कम्यूनिटी कनेक्ट इनिशिएटिव	
8. लड़कियों के लिए सुरक्षित और समावेशी सीखने के माहौल का निर्माण	25
लड़कियों को स्कूल वापस लाना	
लड़कियों का स्कूल में ठहराव	
समुदायों के साथ जुड़ाव	
9. फील्ड से कहानियां	33
अवसर ने दी असिता के दरवाजे पर दस्तक	
निशा को कैंप विद्या के जरिए 3 साल बाद मिला दोबारा पढ़ाई का मौका!	
परेश ने अपने गांव में किया बालिका शिक्षा का प्रसार	
कोविड-19 राहत किट से सकरी को मिली अपने परिवार का पेट पालने में मदद	
टीम बालिका का सशक्तिकरण	
कौशल विकास पाठ्यक्रम	
10. शिक्षा के चैंपियंस	43
देश के टीम बालिका	
टीम बालिका ऑफ द ईयर	
फील्ड चैंपियंस	
11. साझेदारियां	48
नई साझेदारियां	
12. 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए कमाई और खर्च का विवरण	50
13. 31 मार्च 2022 तक बैलेंस शीट	51
14. भागीदार	52
15. सम्मान	53

हमारे बारे में

एजुकेट गर्ल्स एक गैर-लाभकारी संस्था है, जो भारत के सबसे अधिक ग्रामीण और दूरदराज समुदायों के साथ यह सुनिश्चित करने के लिए काम करती है कि सभी लड़कियां स्कूल जाएं। 2007 में स्थापित,एजुकेट गर्ल्स की वर्तमान में राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में सरकारों के साथ भागीगारी है और इन तीन राज्यों में 18,000+ गांवों में काम करती है। इन तीन राज्यों के गांवों में लड़कियों को शिक्षित करने का काम करती है।

एजुकेट गर्ल्स लड़कियों की शिक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हजारों सामुदायिक स्वयंसेवकों के जरिए समुदाय के साथ मिलकर काम करती है। ये सुनिश्चित करने के सरकार के प्रयास का समर्थन करती है कि हर लड़की स्कूल जाए, स्कूल में रहे और साक्षरता और अंक-ज्ञान सीखने के उनके मूलभूत कौशल में सुधार हो।

विजन

हमारा लक्ष्य सभी बालिकाओं के लिए व्यवहारिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाना है, ताकि एक ऐसे भारत का निर्माण हो सके, जहां सभी

बच्चों के पास गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हासिल करने के समान अवसर हों।

मिशन

हम समुदाय और सरकार के मौजूदा संसाधनों की मदद से ये सुनिश्चित करते हैं कि सभी लड़कियां स्कूल जाएं और अच्छी तरह से सीखें।

लक्ष्य

हमारा लक्ष्य 2024 तक देश के 1.5 करोड़ बच्चों की शिक्षा तक पहुंच और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है।

संस्थापिका की कलम से

प्रिय साथियों,

कोविड की दूसरी लहर कहीं अधिक विनाशकारी थी, जिसमें संक्रमण की दैनिक दर 2020 की महामारी के चरम को भी पार कर गई थी। यह समय हम सभी- हमारी बालिकाओं, समुदायों, कर्मचारियों, टीम बालिका स्वयंसेवकों और अन्य हितधारकों के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण था। हमारे द्वारा वर्षों से लड़कियों की शिक्षा की दिशा में की गई सभी प्रगति को खो देने का डर था।

600 दिनों के साथ भारत ने दुनिया में दूसरी सबसे लंबे समय के लिए स्कूल बंदी देखी थी। महामारी के दौरान 15 लाख स्कूलों के बंद होने से प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में नामांकित 24.7 करोड़ से अधिक बच्चे प्रभावित हुए हैं।

पिछले साल, मैं हमारे लर्निंग कैंप में नामांकित एक लड़के नितिन से मिली। पहले दिन, मैंने कैंप में सभी से एक चित्र बनाने को कहा कि वे खुद को कैसे देखते हैं। नितिन ने खुद को लाल बटन वाले साफ और औपचारिक शर्ट, शॉर्ट्स, जूते, बड़े करीने से कंघी किए हुए बालों और लंच और फलों वाले टिफिन बॉक्स के साथ चित्रित किया। उसने खुद को एक शिक्षित व्यक्ति के रूप में देखा और वह इसे पाने के लिए बेताब था। वह सब कुछ सीखना और आत्मसात करना चाहता था, जो सिखाया जा रहा था।

कुछ दिनों में उसने कक्षा में आना बंद कर दिया। मैं उसे खोजने गई और मुझे बताया गया कि उसकी मां हजारों मील दूर बैंगलोर में एक निर्माण स्थल पर काम कर रही है। उसके चाचा उसे अपने साथ कोयले की खदान में काम करने के लिए ले गए हैं।

लॉकडाउन से पहले वह 10 साल का था और इस साल वह 12 साल का हो जाएगा। जब स्कूल फिर से खुलेंगे तो क्या वह स्कूल वापस जाएगा? हम उसे कैसे खोजने जा रहे हैं? हम यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि वह स्कूल में वापस आ जाए? ये तो सिर्फ एक लड़के नितिन की कहानी है, लेकिन उसके जैसे लाखों बच्चे हैं, जिनके लिए ये एक नई सच्चाई बनने जा रही है। अब सोचिए, अगर यह एक लड़के के साथ हो सकता है, तो इसका उन लड़कियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जो सबसे कमजोर स्थिति में हैं।

साल भर हमारा ध्यान बच्चों को स्कूल वापस लाने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने पर था - सभी बच्चे, वे कोई भी हो सकते हैं- नितिन, एक कोविड-19 अनाथ या एक लड़की जो कोविड-19 आने के समय 14 साल की हो गई थी, और लड़कियों के इस आयु वर्ग के लिए स्कूल वापस नहीं

लौटने का सबसे अधिक जोखिम हो सकता है क्योंकि वे शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत प्रवेश के लिए आयु पात्रता के मानदंड को पार कर चुकी होंगी।

हम माता-पिता/अभिभावकों के साथ लगातार संपर्क में रहे हैं, हमने उनके बच्चों को वापस स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए उनसे परामर्श और प्रेरित किया है। हमने और लड़कियों की पहचान करने के लिए समुदाय के साथ काम किया जो अब विभिन्न कारणों से जैसे- रिवर्स माइग्रेशन, घरों पर वित्तीय बोझ और अन्य कारणों से स्कूल से बाहर हैं। हमने नामांकन को प्रोत्साहित करने के लिए समुदाय आधारित शिक्षण भागीदारी (कैंप विद्या) को डिजाइन और लागू किया है। इन सभी रणनीतियों ने हमें बच्चों को स्कूल वापस लाने में मदद की!

हमारे 3 राज्यों और 18,000 हजार गांवों में मौजूद 18,000+ टीम बालिका स्वयंसेवकों, 2,000 पूर्णकालिक कर्मचारियों की सेना के समर्थन से स्थिति का जायजा लिया।

एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के जरिए हमने 1,517 उन गांवों की पहचान की, जो आर्थिक रूप से सबसे अधिक पिछड़े थे और जिन्हें अतिरिक्त समर्थन की सख्त जरूरत थी। वे ऐसे गांव थे, जिनमें सबसे अधिक संख्या में शिक्षा से वंचित लड़कियां थीं, और वहां के लोगों की किराने के सामान और चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंच नहीं थी। हमने 2021 में 1,06,939 राशन और स्वच्छता किट वितरित किए।
यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे सीख रहे हैं, इस वर्ष भी हमने कैंप विद्या का आयोजन किया - हमारी समुदाय आधारित शिक्षण पहल के जरिए कैंप विद्या में 340,000 बच्चों को सफलतापूर्वक पढ़ाया गया है।

मुझे उम्मीद है कि यह वार्षिक रिपोर्ट बच्चों, विशेष रूप से युवा बालिकाओं को स्कूल वापस भेजने की अति आवश्यकता पर गहन जानकारी प्रदान करने में न्याय करेगी। मैं आप सभी को धन्यवाद देना चाहूंगी जो इन मुश्किल समय में लड़कियों को शिक्षित करने के लिए एजुकेट गर्ल्स के साथ खड़े थे और जिन्होंने हमें कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप आने वाले दिनों में भी लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने का काम जारी रखेंगे।

धन्यवाद,
सफीना हुसैन,
संस्थापिका और बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

डॉ. गणेश नटराजन

संस्थापक और कार्यकारी अध्यक्ष

5F वर्ल्ड, देश में डिजिटल स्टार्टअप, कौशल और सामाजिक उद्यम के लिए एक मंच

विनिर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, फ्रेंचाइजिंग और शिक्षा में 30 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ, डॉ. गणेश ने Aptech और Zensar टेक्नोलॉजीज के सीईओ के रूप में काम किया है।

इरीना विट्टल

पूर्व साथी

मैकिन्से एंड कंपनी

भारत की कुछ प्रसिद्ध कंपनियों के बोर्ड में एक स्वतंत्र निदेशक, इरीना के पास व्यापार क्षेत्र में 24 वर्षों का अनुभव है और वह भारत के शहरी एजेंडे और कृषि-बाजारों से संबंधित मुद्दों पर काम करती हैं।

लुइस मिरांडा

अध्यक्ष और सह-संस्थापक

इंडियन स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी

लुइस सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी और CORO के अध्यक्ष और टेक चार्ज के सह-संस्थापक भी हैं और 2 अत्यधिक सफल कंपनियों - HDFC बैंक और IDFC प्राइवेट इक्विटी की स्थापना में शामिल रहे हैं।

सुमित बोस

पूर्व केंद्रीय वित्त सचिव और वित्त मंत्रालय में राजस्व सचिव,

भारत सरकार (GOI)

कई कंपनियों के बोर्ड में एक स्वतंत्र निदेशक के रूप में काम करते हुए, सुमित प्राथमिक शिक्षा विभाग में संयुक्त सचिव के रूप में सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) के शुभारंभ के लिए जिम्मेदार थे।

सफीना हुसैन

संस्थापक और बोर्ड सदस्य

एजुकेट गर्ल्स

एजुकेट गर्ल्स की स्थापना से पहले सफीना ने दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में वंचित समुदायों के साथ बड़े पैमाने पर काम किया। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से स्नातक, उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया के पहले डेवलपमेंट इम्पैक्ट बॉन्ड का नेतृत्व किया।

उज्ज्वल ठक्कर

पूर्व सी.ई.ओ

प्रथम और गिवइंडिया

उज्जवल ठाकर के पास भारत में बैंकिंग, वित्तीय उद्योग और विकास क्षेत्र में समृद्ध और विविध अनुभव है और उन्होंने हाल ही में सात अन्य वरिष्ठ पेशेवरों के साथ एक वर्चुअल प्रोबोनो संगठन, उज्जवल इम्पैक्ट एडवाइजर्स (UIA) की स्थापना की है।

खबरों में

THE TIMES OF INDIA
Can we ensure that all children return to schools?

Safeena Hussain (India)

EDUCATION
Educate Girls Joins UNICEF And YuWaah's #YoungWarriors Movement

International Day of the Girl Child: 4 organisations fighting for girls education and ensuring their social growth

THE PREDICTIVE POWER OF MACHINE LEARNING

Reporters
In trafficking-ridden UP district, girls are quitting school for want of smartphones

THE TIMES OF INDIA
The Impact of digital revolution on the gender divide
MProfit

Reporters
Forced into menial jobs during lockdown, these girls now teach one another

THE NEW INDIAN EXPRESS
Starbucks partners with Sabyasachi to launch limited-edition merchandise

Hindustan Times

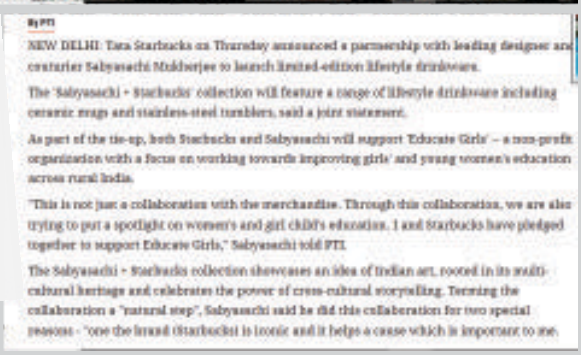
By PTI
NEW DELHI: Tata Starbucks on Thursday announced a partnership with leading designer and creative Sabyasachi Mukherjee to launch limited-edition lifestyle drinkware.
The 'Sabyasachi + Starbucks' collection will feature a range of lifestyle drinkware including ceramic mugs and stainless-steel tumblers, said a joint statement.
As part of the tie-up, both Starbucks and Sabyasachi will support 'Educate Girls' – a non-profit organization with a focus on working towards improving girls' and young women's education across rural India.
"This is not just a collaboration with the merchandise. Through this collaboration, we are also trying to put a spotlight on women's and girl child's education. I and Starbucks have pledged together to support Educate Girls," Sabyasachi told PTI.
The Sabyasachi + Starbucks collection showcases an idea of Indian art, rooted in its multi-cultural heritage and celebrates the power of cross-cultural storytelling. Terming the collaboration a "natural step", Sabyasachi said he did this collaboration for two special reasons - "one the brand (Starbucks) is iconic and it helps a cause which is important to me.

हमारे सफर पर एक नजर

2007
संगठन स्वतंत्र रूप से पंजीकृत

2008
पाली में पायलट प्रोजेक्ट की शुरुआत

2010
पूरे पाली जिले में प्रोजेक्ट की शुरुआत

2011-13
जालौर और सिरोही जिले में प्रोजेक्ट का विस्तार

2014-15
अजमेर, बूंदी और राजसमंद जिलों में प्रोजेक्ट का विस्तार

2015-16
भीलवाड़ा जिले में डेवलपमेंट इम्पैक्ट बॉन्ड हेतु प्रोजेक्ट शुरू। उदयपुर, झालावाड़ में प्रोजेक्ट का विस्तार और मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में कार्य का विस्तार

2016-18
राजस्थान में बांसवाड़ा और मध्य प्रदेश में अलीराजपुर, खंडवा, बड़वानी और धार में विस्तार तथा मध्य प्रदेश में इनऑर्गेनिक एनजीओ साझेदारी की शुरुआत

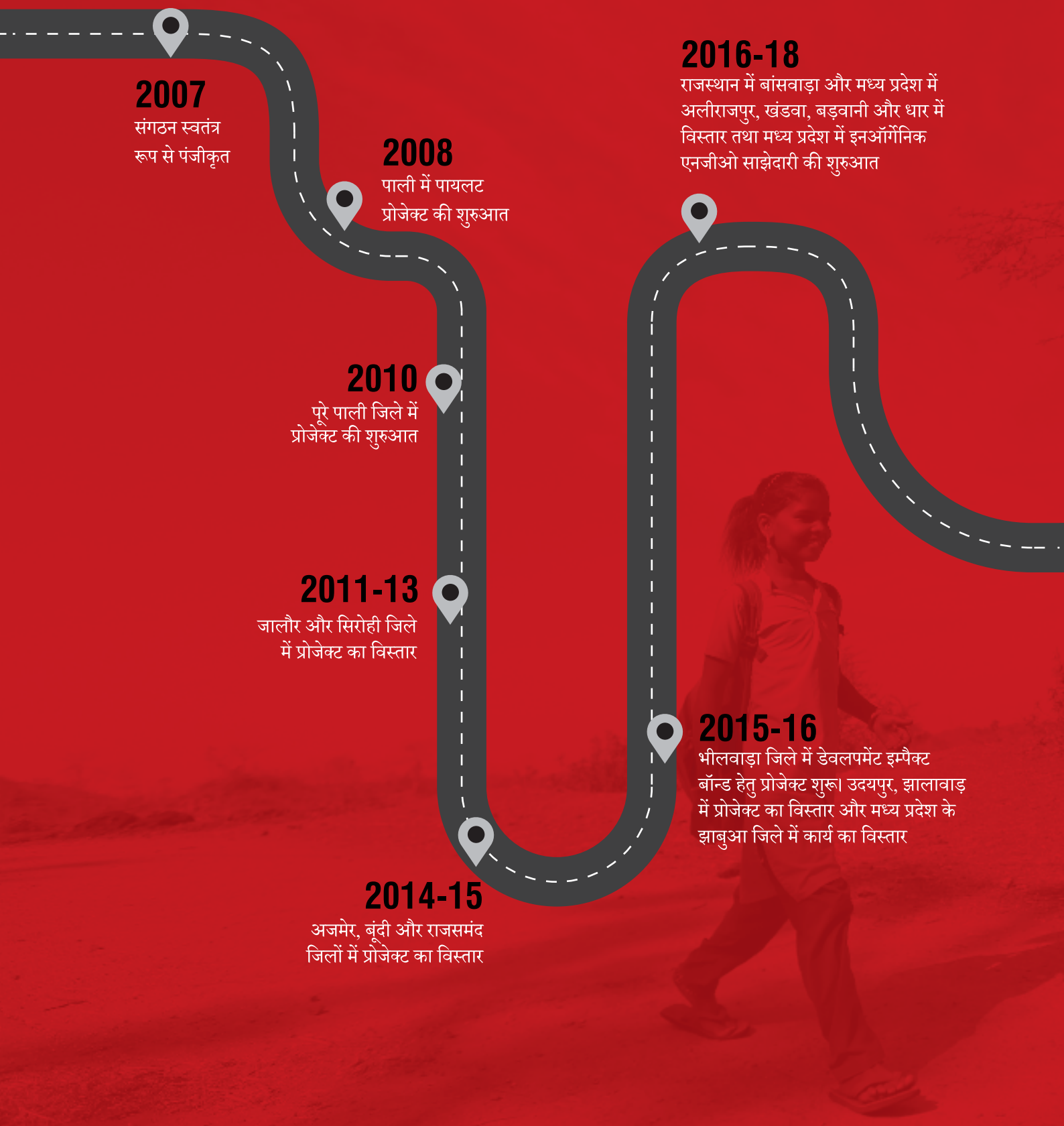

2018-19

एजुकेट गर्ल्स के DIB प्रोजेक्ट ने अपने लक्ष्य परिणामों को पार किया और इसका सफलतापूर्वक समापन

2019-20

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट, कौशांबी, बांदा और मध्य प्रदेश के सीधी, सिंगरौली और शहडोल में कार्य का विस्तार

2020-22

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, फतेहपुर, रॉबर्ट्सगंज, मिर्जापुर, उन्नाव, सोनभद्र, रायबरेली और संत रविदास नगर में कार्य का विस्तार

2022-23

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, फतेहपुर, रॉबर्ट्सगंज, मिर्जापुर, उन्नाव, सोनभद्र, रायबरेली और संत रविदास नगर में कार्य का विस्तार

यात्रा

बंदी से वापसी तक

कोविड-19 का निरंतर प्रभाव

कोविड-19 ने हमारे लिए शिक्षा प्रणालियों के इतिहास में सबसे बड़े व्यवधानों में से एक पैदा कर दिया है, जिससे दुनिया भर के 190 देशों से अधिक देशों के करीब 1.6 अरब छात्र प्रभावित हुए हैं। दुनिया के 94 प्रतिशत छात्र स्कूल या अन्य सीखने के स्थान बंद होने से प्रभावित हुए, जिनमें से 99 प्रतिशत छात्र निम्न और मध्यम वर्गीय आय वाले परिवारों से थे। यूनिसेफ के अनुसार, कुछ देश स्कूल बंद होने की वजह से आए बदलावों से सामंजस्य बिठाने में सक्षम रहे हैं लेकिन अधिकांश देश ऐसा नहीं कर पाए हैं।

कोरोना वायरस महामारी का प्रभाव मौजूदा सामाजिक-आर्थिक अंतराल की याद दिलाता है, जो भारत में शिक्षा और लैंगिक समानता को प्रभावित करता है। बालिका शिक्षा को लेकर महामारी से पहले से ही मौजूद ये अंतराल और बाधाएं अब और बढ़ गई हैं। आज के हालात ग्रामीण इलाकों और गरीब समुदायों के हाशिए पर मौजूद बच्चों, जिनके पास साक्षरता नहीं है या कम है और जो पहली पीढ़ी के पढ़ने वाले हैं, उनकी शिक्षा तक पहुंच और सीखने के स्तर को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं।

कोरोना महामारी ने लड़कियों की शिक्षा और सुरक्षा के लिए कड़े अवरोधों को फिर से स्थापित कर दिया है जो लंबे समय तक जारी रह सकते हैं। महामारी के प्रभावों से निपटने के लिए, इस चुनौतीपूर्ण वर्ष में हम लड़कियों को स्कूल वापस लाने के लिए एक सोच और एक टीम के रूप में आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

एजुकेट गर्ल्स का हस्तक्षेप

सबसे ज्यादा जरूरतमंद लोगों तक पहुंच

एजुकेट गर्ल्स संस्था राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में बालिका शिक्षा के लिए जिन दूरस्थ और वंचित समुदायों से जुड़ी है, वे बुरी तरह प्रभावित हुए थे। महामारी से निपटने के लिए, एजुकेट गर्ल्स संस्था ने निम्नलिखित उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए कोविड रणनीति विकसित की।

संगठन को लचीला बनाना

एजुकेट गर्ल्स संस्था की टीम ने सुरक्षा किट वितरित किए, स्वास्थ्य कार्यक्रम आयोजित किए और कर्मचारियों एवं टीम बालिका स्वयंसेवकों के लिए टीकाकरण की व्यवस्था की। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि लगभग 100% टीम बालिका स्वयंसेवकों और कर्मचारियों का पूरी तरह से टीकाकरण हो चुका है।

समुदाय को जोड़ने की पहल (कम्यूनिटी कनेक्ट इनिशिएटिव)

समुदायों से जुड़े रहना और परिवारों की जरूरतों को समझना और उन्हें वह स्थान देना महत्वपूर्ण था ताकि वे अपनी कहानियां साझा करें और समर्थित महसूस कर सकें। इस पहल ने लॉकडाउन के दौरान जीरो मोबिलिटी के बावजूद समुदाय के प्रमुख हितधारकों के साथ गहरे संबंध बनाने में मदद की।

'कम्यूनिटी कनेक्ट' का प्रारंभिक चरण मदद की जरूरत वाले परिवारों की पहचान के साथ ही आवश्यक समर्थन को समझने पर केंद्रित था। सामुदायिक जुड़ाव के विश्लेषण के बाद, एजुकेट गर्ल्स ने राशन किट वितरण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण संबंधों के माध्यम से प्रत्यक्ष रुप से समर्थन के लिए दो तरफा दृष्टिकोण तैयार किया।

इस पहल से हमें राहत किट वितरण के लिए सबसे कमजोर परिवारों की पहचान करने में मदद मिली। परिवारों के साथ जुड़ने से हमें माता-पिता की अपनी बेटियों को स्कूल भेजने की इच्छा के संबंध में समुदाय का मनोभाव पता लगाने में भी मदद मिली।

कम्युनिटी कनेक्ट के लिए प्रशिक्षित और हितधारक से संपर्क किया गया

आंगनवाड़ी

9,601

सहायक नर्स और दाई

2,358

अभिभावक (माता-पिता)

2,74,007

शिक्षक

20,226

टीम बालिका

13,813

गांव के प्रभावशाली व्यक्ति / पीआरआई / एसएमसी सदस्य

77,856

प्रमुख हितधारकों से संपर्क

3,97,861

कुछ प्रमुख निष्कर्ष

170k+ परिवारों ने आजीविका के नुकसान की सूचना दी

कई घर अनाथ हो गए थे और महिलाओं के नेतृत्व वाले घरों में बढ़ोतरी देखी जा सकती है

20% उत्तरदाताओं **(60k+)** ने कहा कि उनके पास आधार कार्ड या राशन कार्ड नहीं है

90% माता-पिता **(250k+)** ने बताया है कि वे अपने बच्चों को कैंप विद्या में भेजने के इच्छुक हैं

सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक राहत किट की जरूरत वाले

86,976

सबसे कमजोर परिवारों की पहचान करना रहा है

कोविड-19 राहत किट का वितरण

महामारी के दौरान दिहाड़ी मजदूरों की अनुपलब्धता के कारण आय का नुकसान एक बड़ा झटका था। समुदाय में सबसे कमजोर लोगों की जरूरतों को समझते हुए एजुकेट गर्ल्स ने राहत किट के साथ उनकी मदद की।

इन कमजोर परिवारों पर जोर देने के साथ, राशन पैकेज को राहत और स्वच्छता किट में संशोधित किया गया, जिसमें सूखा भोजन, हैंड सैनिटाइजर, मास्क और सैनिटरी पैड शामिल थे। एजुकेट गर्ल्स ने सबसे कमजोर को इस प्रकार परिभाषित किया:

1. अति-गरीब परिवार जिनके पास आधार कार्ड या राशन कार्ड जैसे दस्तावेज नहीं हैं, ऐसे दस्तावेज जो उन्हें सरकारी राहत योजना का लाभ उठाने में सक्षम बनाते हैं।
2. कोविड-19 संकट के कारण अनाथ हुए और एकल माता-पिता वाले परिवार (परिवार में कोविड-19 से मौत के कारण)

1,06,939 परिवारों को राहत किट दी गई।

टीम बालिका स्वयंसेवकों तक पहुंचना

टीम बालिका स्वयंसेवक हमारे कार्यक्रम मॉडल का एक अभिन्न हिस्सा हैं और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनमें से ज्यादातर हाशिए पर रहने वालें परिवारों से आते हैं। लॉकडाउन हटने के बाद टीम बालिका की बढ़ी हुई गतिशीलता को ध्यान में रखते हुए, उनके बीच वितरित किटों की सामग्री में हैंड सैनिटाइजर और मास्क ज्यादा थे।

12,256 टीम बालिका स्वयंसेवकों ने राहत किट प्राप्त की।

स्कूल रेडीनेस किट का वितरण

झिझक से निपटने और स्कूल में बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए, **एजुकेट गर्ल्स ने तीसरी लहर के लिए कोविड-19 राहत प्रतिक्रिया के हिस्से के रूप में 24,000 से अधिक संचालित स्कूलों में स्कूल रेडीनेस किट वितरित किए।** किट में मास्क, सैनिटाइजर, हैंडवॉश, स्प्रे बोतलें और कोविड-19 जागरूकता पर एक पोस्टर था।

समुदाय आधारित शिक्षण शिविर (कैंप)

कैंप विद्या के तहत, 7-14 वर्ष की आयु वर्ग की सबसे कमजोर शिक्षा से वंचित लड़कियों के नामांकन को प्रोत्साहित करने के लिए समुदाय-आधारित शिक्षण शिविर आयोजित किए गए थे। **इस वर्ष 1,17,900 बच्चों के साथ 5,142 शिविर आयोजित किए गए।**

स्वयंसेवी और स्टाफ प्रशिक्षण के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी

टीम बालिका (स्वयंसेवक) और प्रशिक्षित कर्मियों को डोर-टू-डोर सर्वेक्षण, स्कूल प्रबंधन समिति की तैयारी, सामुदायिक जुड़ाव, जीवन कौशल शिक्षा, सीबीएल और करियर ओरिएंटेशन के लिए तैयार किया गया था। स्टाफ कर्मियों को समुदाय, माता-पिता, स्वयंसेवकों आदि के साथ बातचीत करने के लिए सॉफ्ट स्किल्स प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

डिजिटल साक्षरता, आईसीटी से प्रभावित शिक्षाशास्त्र और ऑनलाइन आकलन को शामिल करने के लिए प्रारंभिक और चल रही शिक्षण तकनीकों में सुधार के लिए कदम उठाए गए। मॉड्यूल का उद्देश्य शिक्षकों के बीच डिजिटल पहुंच जेंडर और कौशल के अंतर को खत्म करना है, साथ ही इसका उद्देश्य कम/निम्न-तकनीक वातावरण में प्रशिक्षण की जरूरतों को भी पूरा करना है। स्टाफ और टीम बालिका के प्रशिक्षितों का परिणाम-वार विश्लेषण इस प्रकार है:

	नामांकन	ठहराव	गुणवत्तापूर्ण
स्टाफ	2,530	2,283	2,352
टीम बालिका	9,895	16,220	5,878

लड़कियों के लिए सुरक्षित और समावेशी शिक्षण वातावरण का निर्माण

बालिकाओं को **वापस स्कूल से जोड़ना**

बालिकाओं की शिक्षा का समर्थन करने के लिए समुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देना एक महत्वपूर्ण रणनीति थी। स्कूलों में लौटने वाली लड़कियों के समर्थन के लिए समुदायों और देखभाल करने वालों को सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए संदेश तैयार किए गए थे।

इन्हीं रणनीतियों ने 1,94,321 लड़कियों के नामांकन का मार्ग प्रशस्त किया।

एजुकेट गर्ल्स ने सभी बालिकाएं वापस स्कूल जाएं, ये सुनिश्चित करने के लिए सरकारी भागीदारों के साथ मिलकर काम करते हुए तय कार्यक्रम बनाएं। खासतौर पर सबसे वंचित बालिकाओं पर विशेष रूप से जोर दिया, जैसे- कम आय वाले घरों की बालिकाएं, विकलांग बालिकाएं और अल्पसंख्यक परिवारों की बालिकाएं।

जिला स्तरीय विकेन्द्रीकृत योजना / योजनाएं

स्कूल खुलने के बाद, बालिकाओं को वापस स्कूल लौटने में कई रुकावटों का सामना करना पड़ा। इस समस्या का हल निकालने के लिए हमारे प्रत्येक ऑपरेशनल जिले ने सरकार की प्राथमिकताओं और विशेष रूप से समुदाय और बालिकाओं की जरूरतों के अनुरूप अपने जिले और गांव में अपनी अलग योजनाएं और रणनीतियां विकसित की।

शिक्षकों के साथ जुड़ाव

कोविड-19 महामारी के बाद शिक्षकों के ऊपर बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ अन्य जिम्मेदारियों भी बढ़ चुकी थी। फलस्वरूप एजुकेट गर्ल्स के क्षेत्रीय समन्वयक और टीम बालिका साथी जमीनी स्तर पर उपस्थित रहकर, शिक्षकों को समय पर सहायता प्रदान करने में सक्षम रहे। शिक्षकों के साथ जुड़ाव के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

- **बच्चों को वापस स्कूल जाने के लिए तैयार करना**

  शिक्षा से वंचित बच्चों के अभिभावकों से डोर टू डोर संपर्क के जरिए बच्चों को वापस स्कूल लौटने के लिए प्रेरित करने और बच्चों को स्कूल लौटने के लिए प्रेरित करने के लिए शिक्षकों के समर्थन ने स्कूल वापसी के लिए तैयार बच्चों की संख्या बढ़ाने में मदद की। साथ ही शिक्षकों को भी संस्था से स्कूल न जाने वाले बच्चों की जानकारी मिली।

- **राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण**

  सिस्टम स्तर पर सर्वे के नतीजों का इस्तेमाल कर स्कूली शिक्षा की प्रभावशीलता पर चर्चा की गई। इन निष्कर्षों ने सुधार के लिए सबसे वांछित पाठ्यक्रम तय करने के लिए सभी जनसंख्या और क्षेत्रों के प्रदर्शन की तुलना करने में मदद की और मॉक परीक्षा समर्थन के जरिए बच्चों की तैयारी कराने का निर्णय किया।

- **टीकाकरण अभियान**

  सरकार द्वारा शिक्षकों को गांवों में टीकाकरण अभियान आयोजित करने का काम सौंपा गया था। एजुकेट गर्ल्स की टीम ने समुदाय को परामर्श दिया, उन्हें टीकाकरण के महत्व पर एसएमएस और वॉट्सऐप संदेश भेजे और टीकाकरण शिविरों की जानकारी देने जैसी महत्वपूर्ण चीजों में शिक्षकों का सहयोग किया।

बच्चों के दस्तावेज तैयार करने के लिए शिविर संचालन

एजुकेट गर्ल्स की फील्ड टीम उन माता-पिताओं की मदद की जो अपनी लड़कियों को स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए तैयार थे, लेकिन उनके पास स्कूल में नामांकन के लिए आवश्यक राज्य-अनिवार्य दस्तावेज नहीं थे। टीम ने इन दस्तावेजों को बनवाने की प्रक्रिया में उनकी सहायता की। ये दस्तावेज न केवल बालिकाओं को स्कूल में दाखिला दिलाने में मदद करेंगे बल्कि उन्हें सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ दिलाने में भी मदद करेंगे। इसके अतिरिक्त, हमने इन दस्तावेजों को तैयार करने के लिए अपने प्रत्येक परिचालन जिले में प्रशासन के साथ गठबंधन किया और शिविरों का आयोजन किया।

स्कूल से बाहर बालिकाओं की समुदाय द्वारा पहचान (CIOOSGs)

हमने ऐसी बालिकाओं के नए समूह का पता लगाया, जो अपने परिवार के साथ रिवर्स माइग्रेशन यानी वापस गांव की ओर पलायन से गांव वापस लौट आई थीं और स्कूल नहीं जा रहीं थीं। इन बालिकाओं की जानकारी हमारे डेटा बैंक में नहीं थी। इसलिए हमने प्रमुख हितधारकों जैसे कि स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के सदस्यों, ग्रामीण नेताओं और क्षेत्रों में सरकारी अधिकारियों से उनकी पहचान और नामांकन में मदद के लिए समर्थन लिया।

इस साल 29,464 CIOOSGs का सफलतापूर्वक नामांकन कराया गया

बालिकाओं को **स्कूल में रखना**

2020-21 में 1,93,140 नामांकित लड़कियों में से 2021-22 में 1,82,720 यानी 95% स्कूल जा रही थीं।

बच्चों के सीखने की आवश्यकताओं को लेकर माता-पिता को संवेदनशील और शिक्षकों को प्रशिक्षित करना और उनकी संपूर्ण शिक्षा का समर्थन करने के लिए विशेष मॉड्यूल के जरिए उनकी सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा का ख्याल रखना यह सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति थी कि एक बार नामांकन के बाद लड़कियां स्कूल में रहें।

लड़कियों की क्षमता को सीमित करने वाले व्यापक, प्रतिकूल लिंग मानदंडों को बदलने के लिए प्रासंगिक, सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और प्रभावी संदेशों की आवश्यकता होती है। टीम ने इन कार्यक्रमों में माता-पिता और समुदायों को शामिल किया ताकि इसमें लड़कियों की भागीदारी, और शिक्षा के विभिन्न स्तरों और प्रशिक्षण/रोजगार तक के बदलावों में उनके शामिल होने को सुनिश्चित किया जा सके।

स्कूल बंद होने के दौरान भी नामांकित बालिकाओं का सत्यापन

2020-21 में स्कूल बंद होने के दौरान, जिन बालिकाओं के लिए सभी औपचारिक प्रवेश प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी, उन बालिकाओं को प्राथमिकता दी गई ताकि स्कूलों के फिर से खुलने पर उन्हें तुरंत स्कूल में दाखिला दिया जा सके।

स्कूलों के खुलने के बाद, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण था कि नामांकित बालिकाएं वास्तव में स्कूल में उपस्थित हों और केवल कागज पर नामांकित न रहें। यह सुनिश्चित करने के लिए एजुकेट गर्ल्स ने अपने सभी परिचालन जिलों में एक सत्यापन प्रक्रिया चलाई और ये पता लगाया कि कितनी बालिकाएं स्कूल खुलने के बाद अपनी प्रवेश प्रक्रिया के साथ नामांकन के लिए तैयार हैं। नामांकन के लिए तैयार लड़कियों के लिए एक सत्यापन प्रक्रिया चलाई गई, ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि वे स्कूल जा रही हैं। बाद में स्कूल के उपस्थिति रजिस्टर से वेरिफिकेशन हुआ, जिसके माध्यम से 2020-21 की नामांकन के लिए तैयार प्रत्येक बालिका की मैपिंग की गई।

स्कूल प्रबंधन समिति (एस.एम.सी) के साथ जुड़ाव

कोरोना महामारी के बाद जब स्कूल स्कूल दोबारा खुले तब एसएमसी, स्थानीय समुदाय, शैक्षिक कार्यालय और अन्य क्षेत्रीय लोग लड़कियों के नामांकन में वृद्धि और सभी बच्चों की स्कूल में उपस्थिति को बनाए रखने के लिए कार्य योजना बनाने में लगे हुए थे। ऐसे में एजुकेट गर्ल्स की टीम ने बैठकों के माध्यम से एसएमसी सदस्यों के साथ जुड़ाव स्थापित किए और साथ ही उन्हें उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से अवगत कराया। टीम ने उन्हें नए शैक्षणिक वर्ष में स्कूल सुधार योजनाओं को तैयार करने में भी मदद की।

पहुंच

गांवों तक पहुंच बनाई	5,301
एस.एम.सी बैठकों को संचालित कराया	5,573
एस.एम.सी सदस्यों का प्रशिक्षण	61,147

किशोरी बालिकाओं के साथ जीवन कौशल शिक्षा (एल.एस.ई)

एजुकेट गर्ल्स ने नई शिक्षा नीति और डब्ल्यूएचओ पाठ्यक्रम के आधार पर अपने एलएसई मॉड्यूल को नया रूप दिया। ये नया मॉड्यूल बालिकाओं के अंदर आत्म-जागरूकता, लचीलापन, सहानुभूति, पारस्परिक कौशल और कार्यान्वयन के पहले स्तर पर निर्णय लेने के बाद के वर्षों में महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान, रचनात्मकता, बातचीत और संचार कौशल को विकसित करने पर केंद्रित है। बालिकाओं के लिए माध्यमिक स्तर का ज्ञान और कौशल प्राप्त करना भी महत्वपूर्ण है ताकि वे आगे की शिक्षा और कार्य के लिए तैयार हो सकें। माध्यमिक शिक्षा संज्ञानात्मक कौशल में सुधार करती है, जो उच्च मजदूरी और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि, कम गरीबी, और कम प्रजनन क्षमता और जनसंख्या वृद्धि के साथ मजबूती से जुड़ी है। यह उन्हें बाल विवाह और यौन शोषण से भी सुरक्षित रख सकता है।

इन एलएसई सत्रों से अब तक 59,922 किशोरी बालिकाएं जुड़ी हैं

स्कूलों के फिर से खुलने के बाद किशोरियों के साथ बालसभा और एलएसई सत्रों का गठन शुरू किया गया।

समुदायों के साथ जुड़ाव

सामुदायिक जागरूकता बढ़ाने और बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में मदद करने के लिए कई प्रयास किए गए। ये जानते हुए कि शिक्षा ही विकास की कुंजी है, समुदायों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।

एजुकेट गर्ल्स ने समुदायों को न केवल शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक किया बल्कि इसकी उपलब्धता और पहुंच के बारे में भी बताया। साथ ही उन्हें मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं, विभिन्न श्रेणियों के लिए उपलब्ध छात्रवृत्ति की जानकारी प्राप्त करने में भी मदद दी गई।

कैंप विद्या - समुदाय आधारित शिक्षा

2020-21 में कोविड-19 के दुनिया को प्रभावित करने से बड़ी संख्या में स्कूल बंद हो गए, तब एजुकेट गर्ल्स ने कैंप विद्या (एक समुदाय-आधारित शिक्षण कार्यक्रम) की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य बच्चों को व्यस्त रखने और सीखने में उनकी रुचि को बनाए रखना था, ताकि स्कूलों के दोबारा खुलने पर उन्हें स्कूल जाने के लिए प्रेरित किया जा सके।

2021-22 के पहले पांच महीने के दौरान स्कूल नहीं खुले, इसलिए कैंप विद्या में 7 से 14 वर्ष की आयु वर्ग की सबसे कमजोर स्कूल न जाने वाली बालिकाओं पर रणनीतिक ध्यान केंद्रित करना जारी रखा गया। कैंप विद्या के माध्यम से ये कोशिश की गई कि इन बालिकाओं की मूलभूत साक्षरता और औपचारिक शिक्षा प्रणाली में प्रवेश करने के लिए उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया जा सके, ताकि बाद में उन्हें नामांकन के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सके।

इस साल **5,142 कैंपो** में **1,17,900 बच्चे** लाभान्वित हुए

प्राथमिक कार्यक्रमों के साथ-साथ, **हमने 12,914 किशोरियों के साथ 656 शिक्षण कैंप भी आयोजित किए** ताकि उन्हें परीक्षाओं की तैयारी करने में मदद मिल सके।

तीनों राज्यों में बच्चों के लिए कैंप विद्या की संख्या

	राजस्थान	मध्य प्रदेश	उत्तर प्रदेश
कैंपों की संख्या	1,675	2,172	1,951
बच्चों की संख्या	48,070	52,625	40,033

ग्रामीण भारत और बालिकाओं पर कोविड-19 का प्रभाव: फील्ड से मिली जानकारी के अनुसार

नवंबर 2021 में, एजुकेट गर्ल्स ने यह आकलन करने के लिए एक अध्ययन किया कि कोरोना महामारी की वजह से ग्रामीण समुदायों में बालिकाओं के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा और स्कूली शिक्षा को फिर से शुरू करने की उनकी क्षमता कैसे प्रभावित हुई। इस स्तर पर, भारत के कुछ हिस्सों में जब स्कूल खुल गए, तब संस्था ने अपने अध्ययन की शुरुआत की।

यह अध्ययन 5 से 18 आयु वर्ग की बालिकाओं पर केंद्रित था। अध्ययन के माध्यम से, हमने राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के 900 से अधिक ग्रामीण परिवारों की माताओं, किशोरियों और लड़कों से बात की। इन राज्यों के भीतर, प्रत्येक आर्थिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए 11 जिलों का चयन किया गया था, जहां एजुकेट गर्ल्स संस्था काम करती है।

निष्कर्ष स्पष्ट हैं - बालिकाओं की शिक्षा के लिए बाधाएं पहले से कहीं अधिक हैं और हमें यह सुनिश्चित करने के लिए बड़ी बाधाओं से लड़ने की जरूरत है कि ये लड़कियां स्कूल जाएं, स्कूल न छोड़ें और सीखना जारी रखें। गरीबी और पितृसत्ता का प्रभाव बालिकाओं को वापस स्कूलों में लाने के हमारी टीमों के प्रयासों को अत्यधिक चुनौती दे रहा है। इसके अतिरिक्त, हमने ग्रामीण भारत में रहने वाले माता-पिता के बीच रहकर ये महसूस किया कि वे अपनी बालिकाओं को वापस स्कूल भेजने के प्रति हिचक रहे हैं। इसलिए, हमने जमीनी स्तर पर अपने समुदाय आधारित जागरूकता और नामांकन प्रयासों को और मजबूत करने के महत्व को महसूस किया।

फील्ड से
कुछ कहानियां

अवसर ने दी असिता के दरवाजे पर दस्तक

असिता* राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के एक छोटे से गांव से आती हैं। 2018 में 5वीं कक्षा पूरी करने के बाद असिता को अपने पिता की बीमारी के चलते पढ़ाई छोड़नी पड़ी। असिता कि मां एक दिहाड़ी मजदूर हैं, जो आसपास के खेतों में काम करके चंद पैसे कमाती हैं। असिता घर पर रहकर अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करती है तथा पिता का ध्यान रखती थी।

साल 2019 असिता के पिता का बीमारी के चलते निधन हो गया, जिसके बाद परिवार के आर्थिक हालात और खराब होते चले गए। महामारी से लगे लॉकडाउन ने उनकी दिक्कतें और भी ज्यादा बढ़ा दीं। असिता की मां के लिए अपने 10 बच्चों को पालना अब मुश्किल होने लगा था। इसलिए असिता को भी अपनी मां के साथ मजदूरी करनी पड़ी।, ताकि परिवार के लोगों को कम से कम एक वक्त का खाना मिल सके।

असिता भविष्य में एक शिक्षक बनने की उम्मीद करती है ताकि भविष्य में अन्य लड़कियों को घर कामों के लिए अपनी पढ़ाई ना छोड़नी पड़े और वे अपनी पढ़ाई जारी रख सकें।

एक साल बाद, एजुकेट गर्ल्स के फील्ड कोऑर्डिनेटर दिनेश गरासिया की स्कूल न जाने वाली लड़कियों के सर्वे के दौरान असिता की मां से मुलाकात हुई। असिता की मां ने उन्हें अपने परिवार की स्थिति के बारे में बताया। दिनेश बताते हैं कि "मैंने उसके बड़े भाई और मां से उसे पढ़ने देने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए तुरंत मना कर दिया कि मजदूरी के साथ ही असिता घर का काम संभालती है और बकरियों को चराने के लिए ले जाती है। पढ़ेगी तो ये काम कौन करेगा।''

दिनेश ने हार नहीं मानी और दिनेश टीम बालिका कल्पेश के साथ असिता के घर फिर गए और दोनों ने मिलकर उसकी मां को एक बार फिर समझाने की कोशिश की। लेकिन वह यह कहते हुए सहमत नहीं हुई कि वे असिता की पढ़ाई का खर्च वहन नहीं कर सकते। कल्पेश कहते हैं "हमने उन्हें समझाने के लिए लगभग हर दिन उनके परिवार के पास जाना शुरू किया और उन्हें कई सरकारी योजनाओं के बारे में बताया जो असिता की पढ़ाई में मदद कर सकती हैं। लेकिन, वे अब भी मानने को तैयार नहीं थीं। हम जानते थे कि यह उन्हें मनाने का हमारा आखिरी मौका था। इसलिए हमने एक कोशिश और की और मैंने और दिनेश सर ने उन्हें कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के बारे में बताया, जो असिता जैसी लड़कियों के लिए एक मुफ्त सरकारी आवासीय विद्यालय है। बहुत समझाने के बाद आखिरकार असिता की मां मान गईं।"

असिता को आखिरकार पिछले शैक्षणिक सत्र में कक्षा 6वी में नामांकित किया गया। जल्द ही वह कक्षा 7वीं में आ जाएगी। उसके प्रवेश के बाद, दिनेश और कल्पेश ने उसे पालनहार योजना से लाभ उठाने में मदद की, जिसके माध्यम से उसे 1000 रुपए का मासिक भत्ता मिलता है। असिता के जीवन में बहुत सुधार हुआ है। वह अपनी कक्षा के सबसे होशियार छात्रों में से है।

*नाबालिग की पहचान गुप्त रखने के लिए नाम बदला गया है।

निशा को कैंप विद्या के जरिए 3 साल बाद मिला दोबारा पढ़ाई का मौका!

मध्य प्रदेश के खंडवा जिले के एक सुदूर गांव सोनखेड़ी में लगभग 200 घर हैं। यहां गांव के अधिकतर परिवार कमाई के लिए कृषि और श्रम कार्य पर निर्भर हैं। बहुत से परिवार ऐसे भी हैं, जो काम की तलाश में अन्य शहरों में पलायन पर जाते हैं। पलायन करने वाले परिवारों में से एक परिवार 9 वर्षीय निशा* का भी था। निशा दूसरी कक्षा में पढ़ रही थी, लेकिन उसके परिवार की आर्थिक स्थिति एकदम से खराब हो गई, जिसके चलते परिवार पलायन करने के लिए बाध्य हो गया और निशा को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। देखते ही देखते 3 साल गुजर चुके थे और निशा का जीवन अब पूरी तरह से बदल चुका था। कभी शिक्षा के रास्ते पर चलने वाली निशा अब बाल-मजदूरी के रास्ते पर अग्रसर हो चुकी थी।

जब कोरोना महामारी के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की गई, तो अन्य प्रवासियों की तरह, निशा का परिवार भी अपने गांव लौट आया। कुछ समय बाद जब महामारी का प्रकोप कम होने लगा और सरकार ने प्रतिबंधों को कम करना शुरू किया तो एजुकेट गर्ल्स की टीम ने घर-घर जाकर गांव लौटने वाले परिवारों के घर सर्वे की शुरुआत की। सर्वे के दौरान फील्ड समन्वयक, हीरालाल को निशा के बारे में जानकारी मिली। वे फौरन उसके घर पहुंचे और उसके पिता से मुलाकात की। हीरालाल ने निशा के पिता से उसको फिर से स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए कहा। निशा के पिता ने हीरालाल को यह कहते हुए मना कर दिया कि निशा को स्कूल छोड़े 3 साल हो चुके हैं और अब वे उसे स्कूल नहीं भेजना चाहते।

हीरालाल बताते हैं कि ''हम उनके घर लगातार जाते रहे, हमने उन्हें यह कहकर समझाने की कोशिश की कि कैसे निशा के शिक्षित होने से न केवल उसे बल्कि परिवार को भी फायदा हो सकता है। हमने उन्हें उन सरकारी योजनाओं के बारे में भी बताया जो उन्हें लाभान्वित कर सकती हैं। लेकिन निशा के पिता तो मन बना चुके थे, इसलिए फिर एक बार हमें निराशा ही हाथ लगी।''

समस्या को समझने के बाद, हीरालाल ने निशा के परिवार को एजुकेट गर्ल्स की कैंप विद्या पहल के बारे में बताया। उन्होंने परिवार से आग्रह किया कि चलिए आप अगर निशा को स्कूल नहीं भेजना चाहते तो कम से कम कैंप विद्या तो भेजिए जो आपके घर के पास ही लगता है। हीरालाल ने उन्हें बताया कि वहां निशा मजेदार तरीके से हिंदी और गणित का अध्ययन कर सकती है। साथ ही उस स्थान पर कोरोना प्रोटोकॉल का भी पालन किया जाता है तो निशा बिना किसी खतरे के पढ़ सकती है। हीरालाल ने परिवार को ये आश्वासन दिया कि निशा पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, ताकि पढ़ाई और सीखने में निशा को 3 सालों का जो भी नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई हो सकेगी। इस तरह समझाने के बाद, आखिरकार वो दिन आ ही गया जब परिवार वाले उसे कैंप विद्या में भेजने के लिए तैयार हो गए।

शिक्षा के प्रति निशा का समर्पण और सीखने की ललक को देखते हुए, बाद में उसका परिवार फिर से निशा को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो गया। निशा के नामांकन में कुछ दस्तावेजों के न होने की वजह से परिवार को दिक्कत जा रही थी। ये समस्या भी हीरालाल की मदद से हल हुई, जिसके बाद निशा का नामांकन तीसरी कक्षा में कराया गया।

*नाबालिग की पहचान गुप्त रखने के लिए नाम बदला गया है।

> *निशा रोज कैंप आती थी, और उसके सीखने के स्तर में बहुत सुधार हुआ। उसे पढ़ाई में मजा आने लगा और उसने घर पर भी पढ़ाई की।*

परेश ने अपने गांव में किया बालिका शिक्षा का प्रसार

मध्य प्रदेश के धार जिले के गंधवानी ब्लॉक के रहने वाले परेश पिछले कुछ सालों से अपने गांव और लोगों के लिए समर्पित होकर सहयोग कर रहे हैं। कभी वे अपने गांव की आंगनबाड़ी आशा कार्यकर्ताओं की सर्वे में मदद करते हुए दिखते हैं तो कभी पलायन से वापस आए बच्चों को पढ़ाने लगते हैं। उनके अंदर सेवाभाव और मदद का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है।

साल 2018 में परेश ने जब अपने गांव में लड़कियों की शिक्षा के लिए काम करते हुए एजुकेट गर्ल्स के फील्ड कोऑर्डिनेटर मुकेश को देखा तो उनसे रहा नहीं गया। वे मुकेश के पास गए और उनसे संस्था के बारे में जानकारी ली। परेश बताते हैं कि "मैं मुकेश जी से मिला और उनसे संस्था के बारे में पूछा, उन्होंने मुझे लड़कियों को शिक्षित करने और लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के बारे में सब कुछ बताया। मुझे यह जानकर राहत मिली कि वे एक ऐसे प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं, जो मेरे गांव के विकास में मदद करेगी। मैंने मुकेश जी से संस्था के साथ काम करने की इच्छा जाहिर की और उसी वर्ष मैं टीम बालिका के रूप में शामिल हो गया।''

> मैं एजुकेट गर्ल्स का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझे उनके साथ जुड़ने और मेरे गांव के लिए कुछ करने का मौका दिया। आज टीम बालिका के रूप में मेरी एक नई पहचान है और लोग मुझे एक अच्छे समाजसेवी के रूप में देखते हैं।
>
> - परेश

टीम बालिका स्वयंसेवक के रूप में परेश ने गांव में नामांकित और ड्रॉप-आउट लड़कियों की पहचान करने में मुकेश की सहायता की। उन्होंने डोर-टू-डोर सर्वेक्षण, सामुदायिक बैठक और समुदाय को बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए हर संभव प्रयास किए। उन्होंने अपने निरंतर प्रयासों से 35-40 लड़कियों को स्कूल में सफलतापूर्वक नामांकित कराया। उन्होंने इन लड़कियों के परिवारों को नामांकन के लिए उपयोगी आधार कार्ड और समग्र आईडी जैसे दस्तावेज बनवाने में भी सहायता की। कोरोना महामारी से पहले, उन्होंने स्कूल में ज्ञान का पिटारा (एजुकेट गर्ल्स रेमेडियल लर्निंग किट) के सत्रों को भी संचालित किया, जिसके नतीजे बहुत अच्छे निकलकर आए। उनके गांव के बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार हुआ। उन्होंने अपने गांव के स्कूलों में गठित एसएमसी कमेटी को दुरुस्त किया और लगातार बैठक कराई। जिससे स्कूल में बच्चों को बहुत सी सुविधाएं उपलब्ध हुई।

परेश ने कोरोना महामारी के दौरान भी अपने गांव में जागरूकता फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने जरूरतमंद परिवारों को मास्क, सैनिटाइजर का उपयोग करने, स्वच्छता बनाए रखने और सामाजिक संपर्क से बचने की सलाह दी। इसके साथ ही उन्होंने लोगों को टीकाकरण के बारे में भी जागरूक किया और टीके से जुड़े मिथकों को दूर करने में मदद की। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे अपनी शिक्षा से वंचित न रहें, उन्होंने स्कूल में शिक्षकों की सहायता की और मध्य प्रदेश सरकार के ऑनलाइन लर्निंग ऐप डिजीलीप का उपयोग करके बच्चों को पढ़ाया और अपने गांव में कैंप विद्या का आयोजन कर बच्चों की पढ़ाई को कोरोना के कठिन समय में भी जारी रखा।

कोविड-19 राहत किट से सकरी को मिली अपने परिवार का पेट पालने में मदद

कोविड-19 लॉकडाउन के बाद, अकेली मां और और परिवार की एकमात्र कमाने वाली सदस्य सकरी बाई तिवारिया का परिवार आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहा था। उनके पड़ोसियों ने कुछ दिनों तक उनकी मदद की, लेकिन लॉकडाउन के चलते ये मदद ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सकी। उनका परिवार एक दिन में केवल एक समय के भोजन का खर्चा उठा सकता था। लगभग उसी समय, एजुकेट गर्ल्स ने सूखा राशन और स्वच्छता किट जिसमें दाल, चावल, सैनिटाइजर, मसाले, आटा,मास्क, और अन्य सामान थे, उनका वितरण करते हुए कोविड-19 राहत कार्य शुरू किया। फील्ड स्टाफ और टीम बालिका स्वयंसेवक को घर-घर के सर्वे के दौरान सकरी बाई की स्थिति के बारे में पता चला।

कुछ ही दिनों में उनके गांव में राशन और हाइजीन किट का वितरण शुरू हो गया। जब राशन की गाड़ी उनके गांव पहुंची तो परिवारों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। किट मिलने के बाद सकरी बाई और कई अन्य लोगों की आंखों से आंसू छलक आए।

सकरी बाई ने कहा, "इस किट को पाकर मैं कितनी खुश हूं और मुझे कितनी राहत मिली है, ये मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती हूं। मेरे घर में बच्चे हैं और मैं उन्हें खिलाने के लिए संघर्ष कर रही हूं। मेरा दुख कोविच-19 में कई गुना बढ़ गया, लेकिन एजुकेट गर्ल्स की कोविड-19 राहत पहल की वजह से अब मैं कम से कम एक महीने के लिए अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकती हूं। आज मैं ये समझ गई हूं कि शिक्षा कितना महत्वपूर्ण है, इससे मुझे कितना फायदा हो सकता था। अगर मैं पढ़ी-लिखी होती तो अपने पति के गुजरने के बाद नौकरी करके पैसे कमा सकती थी, लेकिन शिक्षा के बिना मुझे शारीरिक श्रम का सहारा लेना पड़ा। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि मेरी सभी लड़कियां स्कूल जाएं ताकि उन्हें मेरी तरह संघर्ष ना करना पड़े।"

"एजुकेट गर्ल्स की कोविड-19 राहत पहल का धन्यवाद, मैं कम से कम एक महीने के लिए अपने परिवार का पेट भर सकती हूं।"

टीम बालिका का सशक्तिकरण

संवाद

संवाद टीम बालिका के साथ संवाद करने के उद्देश्य से उनके साथ बातचीत की एक श्रृंखला है, जिसका उद्देश्य उन्हें एक बड़े मंच से जोड़ना और उन्हें विभिन्न पहलों के बारे में जानकारी देना है, जैसे- यूनिसेफ के यंग वॉरियर, महामारी के दौरान टीकाकरण और मानसिक स्वास्थ्य का महत्व आदि।

संवाद की इन श्रृंखलाओं ने जिले से लेकर संगठनात्मक स्तर तक करीब 7,000 टीम बालिका को खुद को यंग वॉरियर के रूप में रजिस्टर करने और 70% से ज्यादा टीम बालिका के पूर्ण टीकाकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

महिला दिवस पर एक विशेष संवाद का आयोजन 8 मार्च, 2022 को किया गया था जिसमें 4,000 से अधिक महिला टीम बालिका स्वयंसेवकों, ने एजुकेट गर्ल्स की एक बड़ी टीम के साथ अपने विचार और राय साझा किए।

यंग वॉरियर्स

UNICEF ने देश भर के 18 से 30 साल के युवाओं के लिए यंग वॉरियर्स नाम से एक पहल की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य महामारी से हुए नुकसान के खिलाफ लड़ने के लिए इन यंग वॉरियर्स को सक्षम बनाना है। तीन राज्यों की 6,000 से अधिक टीम बालिका इस पहल से जुड़ी हैं।

विद्या बंधन

इस अभियान का उद्देश्य टीम बालिका को टीकाकरण के लिए प्रोत्साहित करना और अपनी खुद की सुरक्षा करने और उनके समुदायों का टीकाकरण कराने की उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक एक बैंड देना था। कुल 12,944 टीम बालिका ने इस अभियान में हिस्सा लिया।

संवाद, यंग वॉरियर्स और विद्या बंधन जैसी पहल ने हमारी 82% टीम बालिका के पूर्ण टीकाकरण को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एक्सपोजर विजिट

एक्सपोजर विजिट का लक्ष्य टीम बालिका का मनोबल ऊंचा रखते हुए नई जगहों और गतिविधियों से उनका परिचय कराना था।तीन राज्यों में 315 टीम बालिका के साथ कुल 18 एक्सपोजर विजिट हुए।

कौशल विकास कोर्स

एजुकेट गर्ल्स ने गूगल फॉर्म डेटा कलेक्शन के जरिए 11366 टीम बालिका की महत्वाकांक्षाओं को जाना। ऑनलाइन कौशल विकास कोर्स चला रहे साझेदारों की पहचान के लिए विशेष प्रयास किए गए। साथ ही स्वयंसेवकों को व्यावसायिक कौशल विकास कोर्स, आत्मरक्षा प्रशिक्षण भी दिया गया। इन पाठ्यक्रमों में भाग ले रहे टीम बालिका की संख्या का विवरण नीचे दिया गया है।

कोर्स का नाम	राजस्थान	मध्य प्रदेश	उत्तर प्रदेश	कुल
डिजिटल साक्षरता	438	198	513	1149
इंग्लिश स्पीकिंग	190	212	425	827
नेतृत्व	0	0	530	530
आत्मरक्षा	0	0	151	151
अन्य कौशल कोर्स	0	0	0	1974

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सहयोग

4,823 टीम बालिका, जिन्हें किताबों का सहयोग मिला

3,487 टीम बालिका

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए किताबें उपलब्ध कराई गईं

राजस्थान - 1,246
मध्य प्रदेश - 773
उत्तर प्रदेश - 1,468

1,336 टीम बालिका

संबंधित किताबों के साथ ऑनलाइन स्पीकिंग कोर्स में शामिल हुए

राजस्थान - 0
मध्य प्रदेश - 358
उत्तर प्रदेश - 978

428 टीम बालिका, जिन्हें करियर कोचिंग मिली

प्रमुख हितधारकों के साथ जुड़ाव

शिक्षक, राष्ट्र निर्माता

'शिक्षक, राष्ट्र निर्माता' कार्यक्रम का आयोजन इसके प्रत्येक प्रखंडों में शिक्षकों के प्रयासों और योगदान की सराहना करने और सम्मान देने के लिए किया गया था। इन आयोजनों ने संगठन और शिक्षकों के बीच तालमेल और जुड़ाव को और मजबूत किया, और शिक्षकों ने पहली बार उनके योगदान के लिए सम्मानित महसूस किया।

10,638
शिक्षकों का सम्मान

131
कुल इवेंट हुए

शिक्षकों की ओर से धन्यवाद

> मैंने देखा है कि एजुकेट गर्ल्स संस्था नामांकन, सीखने और ठहराव के लिए समुदायों और स्कूल आधारित गतिविधियों के जरिए बहुत ही करीब से काम करती है। टीचर एंगेजमेंट इवेंट के जरिए मुझे शिक्षकों को ये बताते हुए खुशी हो रही है कि इस संस्था का विजन और लक्ष्य पूरी तरह हमारे विजन और लक्ष्य के समान है, खासतौर पर बालिका शिक्षा के क्षेत्र में। इसलिए हम सबको उनका समर्थन करना और समर्थन लेना चाहिए।
>
> *ब्रजेश सिंह, ABSA, कौशंबी, चित्रकूट*

> एजुकेट गर्ल्स द्वारा दिए गए इस सम्मान से मैं अभिभूत हूं। यह पहली बार है कि शिक्षकों को इतने बड़े मंच पर पहचान मिली है। शुक्रिया एजुकेट गर्ल्स।
>
> *बांसवाड़ा के एक स्कूल टीचर*

शिक्षा के चैंपियंस

देश के टीम बालिका

विश्वास निगम, बांसवाड़ा, राजस्थान

राजस्थान के टीम बालिका विश्वास ने अपनी विकलांगता को कभी भी बालिका शिक्षा के प्रति उनके उत्साह के आड़े नहीं आने दिया। महामारी फैलने के बाद, उन्होंने अपने कंधों पर ये जिम्मेदारी ली कि गांव की कोई भी बालिका स्कूल न छोड़े। उन्होंने बच्चियों के माता-पिता के साथ ही समुदाय को भी शिक्षा का महत्व समझाया। और इसका नतीजा ये हुआ कि वह 11 बालिकाओं और 8 बालकों का स्कूल में नामांकन कराने में सफल रहे।

रामू देवल, झाबुआ, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश के रामू अपने गांव में एक डिजिटल सेवा पोर्टल चलाते हैं। जब महामारी शुरू हुई तो उन्होंने तुरंत ही वायरस और उसके सुरक्षा उपायों के बारे में जागरूकता फैलानी शुरू कर दी। उन्होंने एजुकेट गर्ल्स के कोविड-19 राहत पहल को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए 265 घरों तक राशन किट पहुंचाई। उन्होंने डोर-टू-डोर सर्वे के जरिए 145 शिक्षा से वंचित बालिकाओं की पहचान की, जिनमें से 12 का पहले ही नामांकन करा दिया था। साथ ही उन्होंने अपने घर पर कैंप विद्या भी चलाया, जहां वह नियमित रूप से 18-20 लड़कियों को पढ़ाते थे।

अंबिकेश मिश्रा, सिंगरौली, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के अंबिकेश मिश्रा हमारे सबसे नए सदस्यों में से हैं। वह केवल 6 महीने पहले ही टीम बालिका बने हैं। इतने छोटे समय में ही उन्होंने शानदार काम किया है। वह अब 14 बच्चों को पढ़ाते हैं, जिनमें से 11 बालिकाएं कैंप विद्या से हैं और वे इन सभी को वापस स्कूल जाने के लिए लगातार प्रोत्साहित करते रहते हैं।

साल के सर्वश्रेष्ठ टीम बालिका

अनीता मीना, उदयपुर, राजस्थान

अनीता ने कोविड-19 को अपने गांव की लड़कियों की शिक्षा को बाधित करने की वजह नहीं बनने दिया। इस साल महामारी के दौरान उन्होंने अपने गांव की 23 लड़कियों के नामांकन में मदद की। कोविड-19 से पहले भी ज्ञान का पिटारा के जरिए उन्होंने बच्चों को पढ़ाया था और नियमित रूप से मोहल्ला मीटिंग की थी।

महेंद्र सिंह, अजमेर, राजस्थान

महेंद्र सिंह कोविड-19 के दौरान सच में अपने समुदाय के साथ खड़े थे। न केवल उन्होंने वायरस के बारे में जागरूकता फैलाई बल्कि जो लोग क्वारंटीन में थे, उन तक अनाज और दवाइयां भी पहुंचाई। उन्होंने डोर-टू-डोर सर्वे किया और 4 लड़कियों का स्कूल और 3 किशोरियों का दूरस्थ शिक्षा में नामांकन कराया।

मीना खापेड़, झाबुआ, मध्य प्रदेश

मीना ने अनामांकित बालिकाओं की पहचान के लिए डोर-टू-डोर सर्वे किया और अपने गांव की 20 लड़कियों का नामांकन कराया। कोविड-19 के दौरान, उन्होंने अपने गांव में 165 घरों में राशन, मास्क और सैनिटाइजर्स बांटने का काम किया। साथ ही उन्होंने कैंप विद्या भी चलाया, जहां उन्होंने नियमित रूप से 18-20 लड़कियों को पढ़ाया।

अनिल पाटिल, खंडवा, मध्य प्रदेश

जब लॉकडाउन खुला, तो अनिल ने डोर-टू-डोर सर्वे किया और माता-पिता को कैंप विद्या की जानकारी देते हुए उनके बच्चों को कैंप में भेजने के लिए प्रोत्साहित किया। अपने प्रयासों से अनिल ने 6 बालिकाओं का स्कूल में नामांकन कराने और 50 बालिकाओं के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में नामांकन में मदद की।

आशीष द्विवेदी, सीधी, उत्तर प्रदेश

आशीष ने फील्ड कोऑर्डिनेटर को डोर-टू-डोर सर्वे करने में बहुत मदद की। उन्होंने कैंप विद्या में पढ़ाया, जहां उन्होंने उन बच्चों पर खास ध्यान दिया, जिन्होंने पढ़ाई पर पकड़ खो दी थी। महामारी के दौरान उन्होंने सफाई की आदतों, टीकाकरण कराने को लेकर जागरूकता फैलाई, और कोविड-19 में माता-पिता के लिए ऑनलाइन योगा क्लासेज आयोजित कीं।

विकास चौधरी, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

विकास ने बच्चों को कैंप विद्या में भर्ती कराने के लिए कड़ी मेहनत की। वह घर-घर गए और माता-पिता को उनके बच्चों को कैंप में भेजने के लिए राजी किया। साथ ही शिक्षा के महत्व पर बोलने के लिए उन्होंने समुदाय की छोटी बैठकें भी कीं। उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके गांव में हर एक व्यक्ति पूरी तरह वैक्सीनेटेड हो। 2021 में उन्होंने 50 बालिकाओं का स्कूल में नामांकन कराया, जिनमें से 10 बालिकाओं ने पहली बार स्कूल में कदम रखा था।

फील्ड चैंपियंस

राकेश कुमार परागी, कोटरा, उदयपुर

राकेश ने महामारी के दौरान भी हार नहीं मानी। पिछले साल 2020-21 सत्र में, समुदाय और सरकार की मदद से, उन्होंने 375 से अधिक पिछड़े तबके की बालिकाओं का स्कूल में नामांकन कराया।

प्रदीप सिंह, मसौदा, अजमेर

प्रदीप एजुकेट गर्ल्स के साथ एक फील्ड कोऑर्डिनेटर के रूप में जुड़े हैं, उन्होंने हर परिस्थिति में बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया है और 154 बालिकाओं का स्कूल में नामांकन कराया है।

गोपाल कुमार प्रजापत, झाडोल सॉलम्बर

गोपाल ने इस साल CIOOSG के जरिए 320 बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ा है। इस साल का डी-टू-डी का लक्ष्य 7 से 14 साल की 148 बालिकाओं का था, इनमें से 70 बालिकाओं का नामांकन पहले ही हो चुका है, इसके साथ ही वह कैंप विद्या में भी बच्चों को पढ़ा रहे हैं।

बलिराम यादव, पुनासा, खंडवा

बलिराम यादव पिछले 3 सालों से फील्ड कोऑर्डिनेटर के रूप में खंडवा जिले में काम कर रहे हैं। उन्होंने 7-14 साल की उम्र की 142 शिक्षा से वंचित बालिकाओं का नामांकन कराया है।

वर्षा सिसोदिया, ठिकरी, बड़वानी

वर्षा 2017 से ही फील्ड कोऑर्डिनेटर के रूप में काम कर रही हैं, वह नियमति तौर पर अपने क्लस्टर के सभी 9 गांवों में शिक्षा के महत्व और बाल मजदूरी के प्रति जागरूकता के लिए जाती रहती हैं। साथ ही उन्होंने कोविड-19 राहत पहल के दौरान राशन वितरण में भी भूमिका निभाई थी।

फात्या तारोले, सेंधवा 3, बड़वानी

फात्या टीम बालिका के रूप में जुड़े और ड्रॉप आउट और कभी स्कूल नहीं गई दोनों बालिकाओं से जुड़े। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के अपने समर्पण की वजह से वह कुछ ही महीनों में फील्ड कोऑर्डिनेटर बन गए। 2021-22 में उन्होंने 280 बालिकाओं का नामांकन कराया।

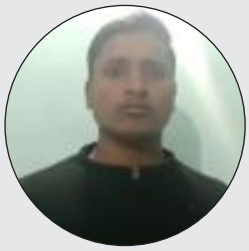

विजय कुमार साहू, चितरंगी 3 सीधी

कोई भी बालिका स्कूल जाने से वंचित न हो, ये सुनिश्चित करने के लिए विजय घर-घर गए। इस साल उन्होंने 42 से ज्यादा बालिकाओं का स्कूल में नामांकन कराया। अपने क्लस्टर की बालिकाओं की बिना रुकावट पढ़ाई सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने कैंप विद्या भी चलाया।

शशि देवी, हाथगांव, फतेहपुर

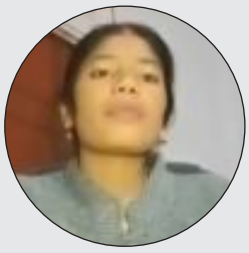

शशि की इच्छा हमेशा से बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने की थी और एजुकेट गर्ल्स के साथ वह अपने इसी सपने को पूरा करने के लिए काम कर रही हैं। इस साल उन्होंने 7-14 साल की 117 बालिकाओं का स्कूल में दाखिला कराया है। उन्होंने न केवल अपने क्लस्टर में 3 कैंप विद्या का सफलतापूर्वक आयोजन किया है बल्कि ये भी सुनिश्चित किया है कि कोई भी लड़की स्कूल ना छोड़े।

रमेश कुमार, बदोखर खुर्द

रमेश ने डोर-टू-डोर सर्वे किया और पाया कि उनके गांव में 226 बालिकाएं स्कूल नहीं जाती हैं। टीम बालिका और अध्यापक की मदद से उन्होंने उन सभी बालिकाओं का स्कूल में नामांकन कराया। साथ ही उन्होंने कैंप विद्या का भी अच्छे से संचालन किया।

भागीदारी

बालिका शिक्षा के एजेंडा को आगे बढ़ाने की कुंजी

लाखों लड़कियों को स्कूल में रखने और उनके स्कूल छोड़ने से रोकने के लड़कियों की शिक्षा के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए मजबूत लिंग-उत्तरदायी डेटा और प्रमाण जैसे अल्पकालिक उपायों और भविष्य के झटकों, तनावों और स्कूल बंदी के लिए तैयार मजबूत, लिंग-उत्तरदायी और लचीली प्रणालियों के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से लंबी अवधि के दृष्टिकोण, दोनों की आवश्यकता होगी।

इस तरह की योजना की ओर उन दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्यों के बढ़ना चाहिए, जो सामुदायिक लामबंदी और जुड़ाव को प्राथमिकता देता है और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि कोई भी लड़की शिक्षा से वंचित न रहे।

सरकार की प्राथमिकताओं के साथ जुड़ाव

सभी राज्यों की वार्षिक और आकस्मिक योजनाएं लड़कियों को स्कूल लौटने में सहायता करने के संबंधित राज्य सरकार के लक्ष्यों के साथ जुड़ी हुई हैं। मध्य प्रदेश में, एजुकेट गर्ल्स ने राष्ट्रीय उपलब्धि (एनएएस) के संचालन में सरकार का समर्थन किया, जो भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा छात्रों के सीखने का एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि सर्वेक्षण है। एनएएस स्कूली शिक्षा की प्रभावशीलता पर एक प्रणाली-स्तरीय प्रतिबिंब देता है। ये निष्कर्ष सुधार के लिए वांछित दिशा खोजने के लिए सभी इलाकों और पूरी आबादी के प्रदर्शन की तुलना करने में मदद करते हैं।

उत्तर प्रदेश में, मिशन प्रेरणा पूरे राज्य में बेसिक शिक्षा विभाग के तहत लगभग 1.3 लाख स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए राज्य का प्रमुख कार्यक्रम है।

राजस्थान में, टीम ने राजस्थान के कुछ जिलों में तकनीकी भागीदारी के जरिए तकनीकी सक्षम नामांकन प्रक्रियाओं को साझा करने के लिए सरकार के साथ मिलकर काम किया, ताकि शिक्षकों को स्कूल से बाहर के बच्चों की पहचान करने और स्कूल में उनकी वापसी कराने पर नजर रखने में मदद मिल सके।

राजस्थान में तकनीकी भागीदारी परियोजना का शुभारंभ

एजुकेट गर्ल्स और राजस्थान राज्य सरकार स्कूल न जाने वाले बच्चों को स्कूल वापस लाने के लिए एक साझा उद्देश्य पर काम करते हैं। महामारी और स्कूलों के 15 महीनों से अधिक समय तक बंद होने के कारण यह मुद्दा और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़कियों के स्कूल वापस न लौटने का खतरा कहीं ज्यादा है।

एजुकेट गर्ल्स ने राजस्थान राज्य सरकार के साथ एक तकनीकी भागीदारी परियोजना में भागीदारी की, जिसका उद्देश्य शिक्षकों को उसके मोबाइल-सक्षम नामांकन ऐप, डेटा प्रबंधन और रिपोर्टिंग के लिए प्रशिक्षित करना है, ताकि वे शिक्षा से वंचित बच्चों की लगातार पहचान और उनका नामांकन कर सकें। इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान बच्चों के नामांकन में शिक्षकों की सहायता के लिए राजस्थान के जोधपुर, बारां और डूंगरपुर जिलों में इस परियोजना को प्रायोगिक तौर पर शुरू किया गया था।

एजुकेट गर्ल्स ने चुने हुए इलाकों में शिक्षा से वंचित बच्चों की पहचान के लिए डोर-टू-डोर सर्वेक्षण करने के लिए मास्टर ट्रेनर्स (सरकारी व्यक्तियों) को प्रशिक्षित किया और एजुकेट गर्ल्स के स्वचालित नामांकन प्रक्रियाओं को अपनाकर बच्चों की 'पहचान' से 'नामांकन' की ट्रैकिंग में मदद की।

इसके बाद मास्टर ट्रेनर्स ने नामांकन के लिए इन प्रक्रियाओं को अपनाने के लिए ग्राम स्तर पर शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। एजुकेट गर्ल्स ने बारां और डूंगरपुर में 90 मास्टर ट्रेनर्स, और बारां में 193 शिक्षकों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया।

उत्कृष्टता के लिए प्रेरणा

R. G. मनुधने फाउंडेशन फॉर एक्सीलेंस (rgMFE) स्वर्गीय रामनारायण के दिमाग की उपज है, और उनके द्वारा इसे वित्त पोषित किया गया था। खुद से कामयाब बने मनुधने (1921-2012) ने "मूल्य-आधारित उत्कृष्टता" का उदाहरण दिया। rgMFE वर्तमान में a) शिक्षा/आजीविका, और b) स्वास्थ्य देखभाल/कल्याण और महिला सशक्तिकरण में कार्यक्रमों का समर्थन करता है, नवीनता पर जोर देते हुए व्यावहारिक और प्रभावी समाधान देता है। rgMFE मध्य प्रदेश के झाबुआ में एजुकेट गर्ल्स के कार्यक्रम का समर्थन कर रहा है।

वित्तीय विवरण

Statement of Income and Expenditure for year ended **31st March 2022**

	For the year ended 31st March, 2022 INR	For the year ended 31st March, 2021 INR
Income		
Donations	93,89,27,678	1,24,70,37,228
Other Income	3,68,46,768	4,29,16,772
Total Income	**97,57,74,446**	**1,28,99,54,000**
Expenditure		
Program Expenses	50,33,38,108	32,30,40,954
Employee Benefits Expenses	49,09,77,081	39,36,69,786
Other Expenses	4,33,52,341	3,21,95,242
Depreciation and Amortization Exps	1,86,47,971	1,22,77,595
Total Expenditure	**1,05,63,15,501**	**76,11,83,577**
Surplus / (Deficit) for the year	**(8,05,41,055)**	**52,87,70,423**

Balance Sheet as on
31st March 2022

I. OWN FUNDS AND LIABILITIES	31.03.2022	31.03.2021
1 Own funds		
(a) Reserves and surplus	92,57,96,691	1,00,63,37,746
2 LIABILITIES		
Non-Current liabilities		
(a) Long term provisions	3,30,12,763	2,52,29,050
Current liabilities		
(a) Other current liabilities	2,15,86,420	4,75,37,488
(b) Short-term provisions	52,11,460	43,00,541
Total	**98,56,07,334**	**1,08,34,04,825**
II. ASSETS		
1 Non-current assets		
(a) Property, plant and equipment		
(I) Tangible assets	2,07,87,570	2,57,85,870
(ii) Intangible assets	24,96,974	67,77,831
(b) Long term loans and advances	96,94,828	1,13,57,584
2 Current assets		
(a) Cash and cash equivalents	93,21,88,554	1,02,80,80,818
(b) Short term loans and advances	1,64,02,257	16,51,491
(c) Other Current Assets	40,37,151	97,51,231
Total	**98,56,07,334**	**1,08,34,04,825**

हमारे सहयोगी

Government of Rajasthan

Government of Madhya Pradesh

Government of Uttar Pradesh

EAC

Unicef

10x10

Accenture DevelopmentPartners

APCO Worldwide

Azim Premji Philanthropic Initiatives

Bohemian Foundation

Cartier Philanthropy

Dasra

Fidelity Foundation

Finastra

Fossil Foundation

Global Giving

HDB Financial Services

HT Parekh Foundation

International Finance Corporation

iPartner India

Jasmine Social Investments

LGT Venture Philanthropy

Lionbridge

Lucille Foundation

Marico Innovation Foundation

Max India Foundation

Mercuri Urval

Montpelier Foundation

National Payment Corporation of India

Oracle

Ray & Tye Noorda Foundation

Pratham Rajasthan

Sandhan, Technical resource agency of the Government of Rajasthan

Sols ARC

STiR Education

Strategy&

Students Stand #withMalala

The Audacious Project

The Mulago Foundation

The Womanity Foundation

*Names arranged in alphabetical order

अब तक के पुरस्कार

HundrED 2021 Global Collection

MIT Solve's Learning for Girls & Women Challenge 2020

Global Giving Award, 2020

ET Prime Women Leadership Awards, 2019

Guide Star India Gold Award, 2018-19

NITI Aayog Women Transforming India Award, 2017

Sofcial Entrepreneur of the Year India Award, 2017 (Finalist)

L'Oréal Paris Women of Worth Award, 2016

Nasscom Foundation Social Innovation Award, 2016

iVolunteer Award, 2016

India's Most Ethical Companies Award, 2015

The Skoll Award For Social Entrepreneurship, 2015

The WISE Award, 2014

Stars Foundation Impact Award, 2014

USAID Millennium Alliance Award, 2014

The British Asian Trust's Special Recognition Award, 2013

Women Change Makers Award, 2012

The CSR Women Leader Award, 2012

The Rotary's Anita Parekh Award, 2012

The World Bank's India Development Marketplace Award, 2011

Asia 21 Young Leader, 2011

EdelGive Social Innovation Honors, 2011

*Arranged in reverse chronology

Head Office (India)

C103/C104, 1st Floor,
Remi Bizcourt, Shah Industrial Estate,
Off Veera Desai Road,
Andheri West,
Mumbai 400053, Maharashtra

educategirls
TeamBalika
educate_girls
educategirlsEG

blog.educategirls.ngo
educategirlsngo
educate-girls

info.in@educategirls.ngo
www.educategirls.ngo

Educate Girls is a project of 'Foundation to Educate Girls Globally' (FEGG) in India

FEGG is registered under Section 8 of the Indian Companies Act, 2013